लावारिस सील

एक सच्ची कहानी

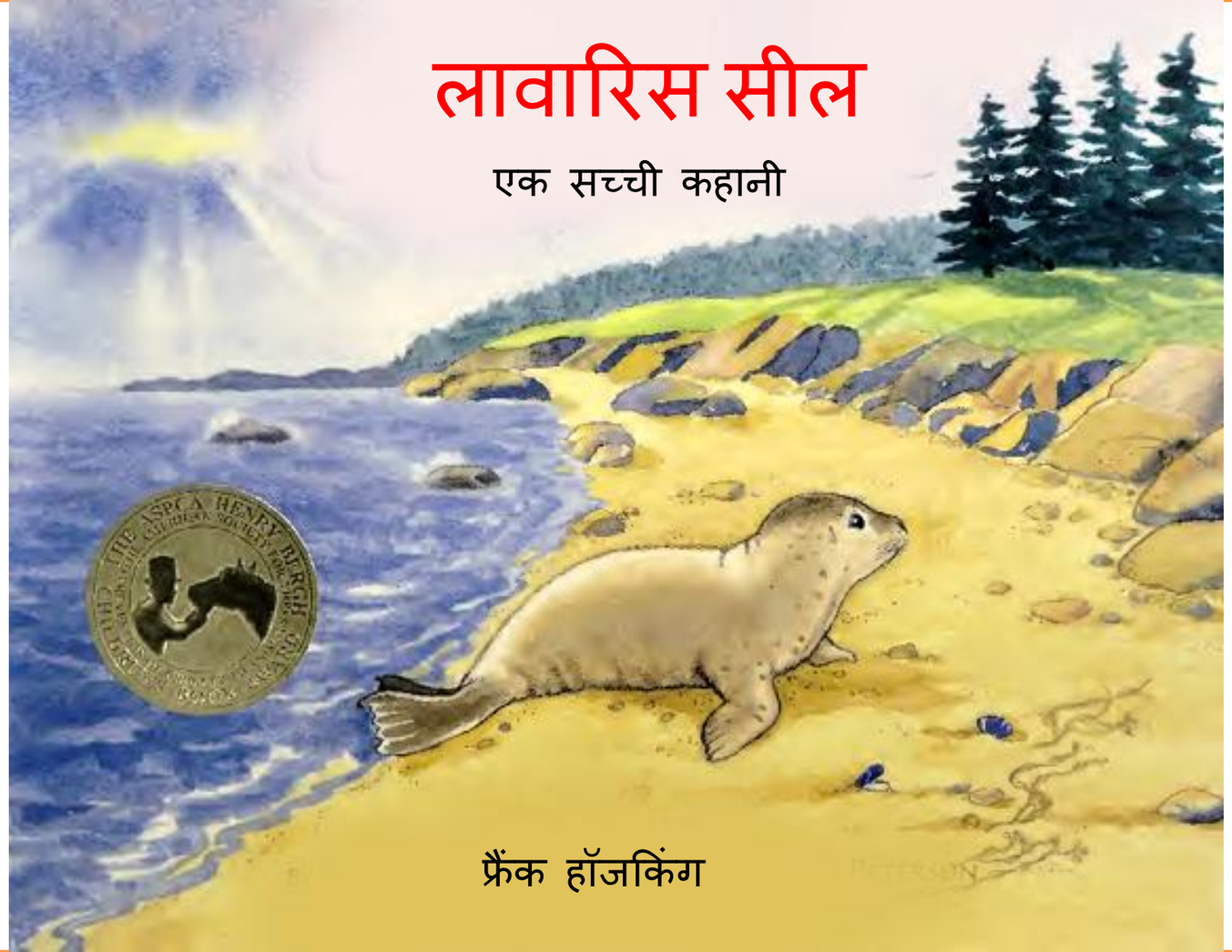

फ्रैंक हॉजकिंग

लावारिस सील

एक सच्ची कहानी

तूफ़ान थम गया है लेकिन अभी भी समुद्र की लहरें 'मेन' राज्य के तट से टकरा रही हैं. सील का एक नन्हा बच्चा लहरों से बाहर निकलने के लिए संघर्ष कर रहा है. उसके आसपास समुद्र की लहरें उछल रही हैं और उसे खींच कर सागर में वापस ले जाने का प्रयास कर रही हैं. उसका जन्म कुछ दिन पहले ही हुआ है और वह बिछुड़ गया है. तूफानी लहरों ने उसे उसकी माँ से अलग कर दिया और वह सागर में खो गया. वह एक-दूसरे को ढूंढ न पाए. बच्चे के लिए यह एक बड़ी समस्या है क्योंकि वह अकेले जीवित नहीं रह सकता. वह अभी भी अपनी माँ के दूध पर निर्भर है, वैसे ही जैसे तुम निर्भर थे जब तुम एक शिशु थे. समुद्र में मछली का शिकार करने और दुशमनों से बचने के तरीके सीखने के लिए माँ की उसे ज़रूरत है.

एक अंतिम प्रयास कर नन्हा सील सागर से बाहर आ गया. लहरों से सुरक्षित होकर उसने चारों ओर देखा. दुपहर के सूर्य की शक्तिहीन किरणें कठिनाई से ही घने बादलों को पार कर धरती तक आ पा रही हैं. बच्चे ने पलकें झपक कर अपनी काली बड़ी आँखों से रेत हटाई.

'ऊह-रूऊऊऊ!" उसने पुकारा.

सागर का तट खाली है. उसकी माँ कोई उत्तर नहीं देती. अपनी कठिन तैराकी की थकान से निढाल बच्चे ने सोने के लिए आँखें बंद कर लीं.

वास्तव में सील का बच्चा तट पर अकेला नहीं है. निकट ही एक चट्टान पर एक आदमी और एक लड़का बैठे हैं. उन्होंने सील के नन्हें बच्चे को पानी से बाहर निकलते देख लिया था. उन्होंने बोस्टन, मेसाचुसेट्स में स्थित 'न्यू इंग्लैंड एक्वेरियम' को फ़ोन कर सूचित कर दिया है. वहाँ के वैज्ञानिक, ग्रेग अर्ली, ने उनसे कहा है कि वह सील के बच्चे का ध्यान रखें.

"अगर एक दिन बीत जाता है और उसकी माँ उसे लेने नहीं आती है तो मैं मेन आकर उसे एक्वेरियम ले आऊंगा," उन्होंने कहा.

अन्य समुद्री स्तनधारियों समान, सील भी एक संरक्षित प्राणी है. इसलिए उसके निकट वही लोग जा सकते हैं जिन्हें लाइसेंस मिला होता है. ग्रेग ऐसे ही लाइसेंस-धारी व्यक्ति हैं.

रात हुई. सील का बच्चा बहुत कम सो पाता है. जब भी उसकी नींद खुलती है वह फिर से माँ को पुकारता है. सुबह होते-होते वह निराश हो जाता है.

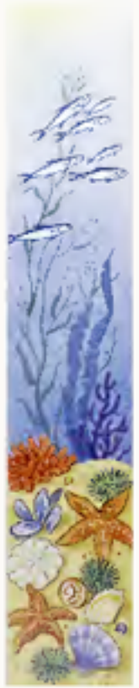

उसी समय, एक सौ पचास मील दूर दक्षिण में स्थित बोस्टन नगर में कोन्नी जो सील बचाव प्रोग्राम की सुपरवाइजर है, ट्रक में सामान रखने में ग्रेग की सहायता करती है और दोनों मेन के लिए चल देते हैं. एक्वेरियम में जो कार्य उन्हें करने पड़ते हैं उनमें एक कार्य उन समुद्री जीवों की देखभाल करना है जो किसी चोट या रोग के कारण स्वयं अपनी देखभाल नहीं कर सकते और जो सागर के तट पर आ जाते हैं या वहाँ आकर फंस जाते हैं. यह दोनों उन जीवों को बचाते हैं, उनकी देखभाल करते हैं और अंततः उन्हें सागर में छोड़ देते हैं. उन्होंने और एक्वेरियम के अस्पताल में उनके साथियों ने समुद्री कछुओं की, व्हेलों की, डोल्फिनों की और अनेक सीलों की सहायता की है. इन में अधिकांश हार्बर सीलें थीं, जो न्यू इंग्लैंड के तट पर बड़ी मात्रा में पाई जाती हैं.

अप्रैल की महीना है. इस समय नन्हीं सीलों के बारे में सेंटर को कई फ़ोन आते हैं क्योंकि सील माताएँ वसंत ऋतु में ही अपने बच्चों को जन्म देती हैं. कई बच्चे तट पर दिखाई देते हैं पर यह सभी किसी मुसीबत में नहीं होते. तुम्हारी तरह वसंत के आरंभिक दिनों में इन्हें भी सागर के पानी में ठंड लगती है. इसलिए अपने को गर्म करने के लिए यह बच्चे पानी से बाहर आ जाते हैं. पर यह अकेले नहीं होते. इनकी माताएं निकट ही पानी के अंदर होती हैं और बच्चों का ध्यान रख रही होती हैं.

सील माताएं अपने बच्चों का अच्छे से ध्यान रखती हैं. लेकिन कभी-कभी तूफ़ान कुछ बच्चों को उनकी माताओं से अलग कर देता है. ऐसा ही उस नन्हें सील शिशु के साथ हुआ था.

कई सील माताओं की अलग समस्या होती है. उनके बच्चे समय से पहले या फिर रोगी पैदा होते हैं. अगर ऐसा तुम्हारे साथ हुआ होता तो तुम्हें तब तक अस्पताल में रखा जाता जब तक कि तुम घर जाने योग्य स्वस्थ न हो जाते. लेकिन सागर में सील के बच्चे के लिए स्वस्थ होना अनिवार्य होता है ताकि वह शार्क मछलियों और तेज़ चलने वाली नावें से अपने को बचा कर सके. ऐसे बीमार बच्चे के साथ तैरते हुए एक सील माँ अपने जीवन को अकसर जोखिम में डाल देती है. इसलिए कई बार, न चाहते हुए भी, सील माँ अपने कमज़ोर बच्चे को अपने से अलग देती है.

सुबह का समय है. ग्रेग और कोन्नी मेन के समुद्री तट पर पहुँच गये हैं. वह आधे घंटे से सील के बच्चे की निगरानी कर रहे हैं. अब उन्हें विश्वास हो गया है कि बच्चे की माँ कहीं आसपास नहीं है. वह उसे वापस बोस्टन ले जाने के लिए तैयार हो जाते हैं.

कोन्नी बच्चे को ले जाने के लिए पिंजरे को ट्रक से बाहर निकालती है. ग्रेग बिना शोर किये, बड़ी सावधानी के साथ बच्चे के निकट आता है. यद्यपि सील का बच्चा एक गुदगुदे खिलौने जैसा दिखता है, वह एक जंगली जीव है. उसके दाँत छोटे हैं, परन्तु नुकीले हैं. अगर वह भयभीत हो जाए तो वह काट सकता है. ग्रेग इस बात को कभी भूलता नहीं है.

बच्चा ग्रेग को निकट आते हुए देखता है. लेकिन भूख के कारण वह कमज़ोर हो गया है. सागर तट पर रात बिताने के कारण उसे ठंड लग गई है. वह भागता नहीं है. जब ग्रेग उसे उठाता है तो वह सिर्फ थोड़ा सा छटपटाता है. कोन्नी प्लास्टिक के पिंजरे का दरवाज़ा खोलती है और ग्रेग बड़े ध्यान से बच्चे को पिंजरे के अन्दर धकेल देता है. बच्चा इतना भूखा, ठिठुरा और थका हुआ है कि वह कोई विरोध नहीं कर पाता.

जैसे ही ट्रक वापस बोस्टन की ओर चलता है, दुर्बलता के कारण सील का बच्चा पिंजरे के एक शांत, अँधेरे कोने में लेट कर सो जाता है.

न्यू इंग्लैंड एक्वेरियम में पहुँचते ही, सील के बच्चे की डॉक्टरी जाँच की जाती है. इस जाँच से अधिकारियों को पता चलेगा कि उसे स्वस्थ करने के लिए कौन सी दवाइयाँ देनी होंगी. एक्वेरियम के पशु चिकित्सक, डॉक्टर एंडी स्टेम्पर, स्टेथोस्कोप की सहायता से बच्चे के दिल और फेफड़ों की आवाज़ सुनते हैं. सांस लेते समय बच्चा घरघराहट की हल्की सी आवाज़ करता है. डॉक्टर समझ जाते हैं कि उसे ठंड लग गई है और शायद निमोनिया हो गया है. हाइपोडर्मिक सुई का उपयोग कर वह उसके खून का एक नमूना लेते हैं. खून को माइक्रोस्कोप के नीचे रख कर उसकी जांच करेंगे. इस जांच से उन्हें पता चलेगा है कि क्या बच्चे के शरीर में कई परजीवी हैं.

परजीवी वह नन्हें जीव होते हैं जो दूसरे जीवों के शरीर में रहते हैं और जो खाना दूसरे जीव खाते हैं उसी से इन परजीवियों का अपना आहार मिलता है. स्वस्थ, जंगली जानवरों को इन परजीवियों से अधिक हानि नहीं होती. लेकिन पशु के एक बीमार, नन्हें बच्चे के उस आहार को यह परजीवी चट कर जाते हैं जो उसे निरोगी होने के लिए चाहिए होता है. इस तरह वह बच्चा अधिक बीमार हो जाता है. अगर इस सील के बच्चे में परजीवी हैं तो इनसे छुटकारा पाने के लिए डॉक्टर एंडी स्टेम्पर उचित दवाई दे सकते हैं. सुई शरीर में जाती है तो बच्चा ज़ोर से चिल्लाता है.

“ऊऊऊह-अव्व्वा-अव्व्व्वा-अव्व्व्व्वा!”

जब बच्चे की डॉक्टरी जांच पूरी हो जाती है तो पशुओं की देखभाल करने वाला व्यक्ति, जिम, रबर सीमेंट की सहायता से लाल रंग की एक डिस्क, जिस पर नम्बर 5 छपा था, उसके सिर पर चिपका देता है. चूँकि हार्बर सील के बच्चे एक जैसे दिखते हैं, इस टैग से मेन सागर तट से लाये गये बच्चे को पहचानना सरल हो जाएगा. समय बीतने के साथ जब बच्चा अपने बाल गिरा देगा, वैसे ही जैसे एक कुत्ता हर वर्ष अपने बाल गिराता है, यह टैग अपने आप उतर जाएगा. लेकिन अभी तो ऐसा लगता है कि जैसे उसने बहुत छोटी सी हैट पहन रखी हो.

दूसरे बच्चों के समूह में जाने से पहले, नये बच्चे को कुछ समय तक अलग रखा जाएगा. वह अलग एक क्वारंटाइन कमरे में अकेला रहेगा जब तक कि एक्वेरियम के लोगों को विश्वास नहीं हो जाता कि उसका रोग ठीक हो गया है और वह दूसरे बच्चों को रोगी नहीं बना सकता. क्वारंटाइन कमरा शांत है और वहाँ प्रकाश कम है. यहाँ बीमार पशु स्वस्थ होते हैं और, अन्य पशुओं का सामना करने से पहले, नये लाये गये पशु एक्वेरियम के वातावरण, ध्वनियों और गंधों से परिचित होते हैं. नन्हीं सील को क्वारंटाइन कमरे की ख़ामोशी अच्छी लगती है.

जब वह बच्चा क्वारंटाइन में है तो उसे नया नाम दिया जाता है. उसकी ऊंची आवाज़ के कारण वहाँ के कर्मचारी उसे 'हाउलर' बुलाते हैं.

जब दवाइयों से उसका स्वास्थ्य ठीक हो जाता है तो हाउलर को क्वारंटाइन से बाहर निकाला जाता है. एक बड़े, सफ़ेद कमरे में सील के अन्य बच्चों के समूह में वह सम्मिलित हो जाता है. कमरे के आधे भाग में एक गहरा तरणताल है जिसमें वह तैर सकते हैं. कमरे के दूसरे भाग में छोटे-छोटे चबूतरे बने हैं जिन पर गर्मी देने के लिए लेंप लगे है. बच्चे इन पर चढ़ कर लेंप के नीचे सो सकते हैं. कमरे में दो स्लाइडिंग दरवाज़े हैं जिनसे हो कर गलियारे में जाया जा सकता है.

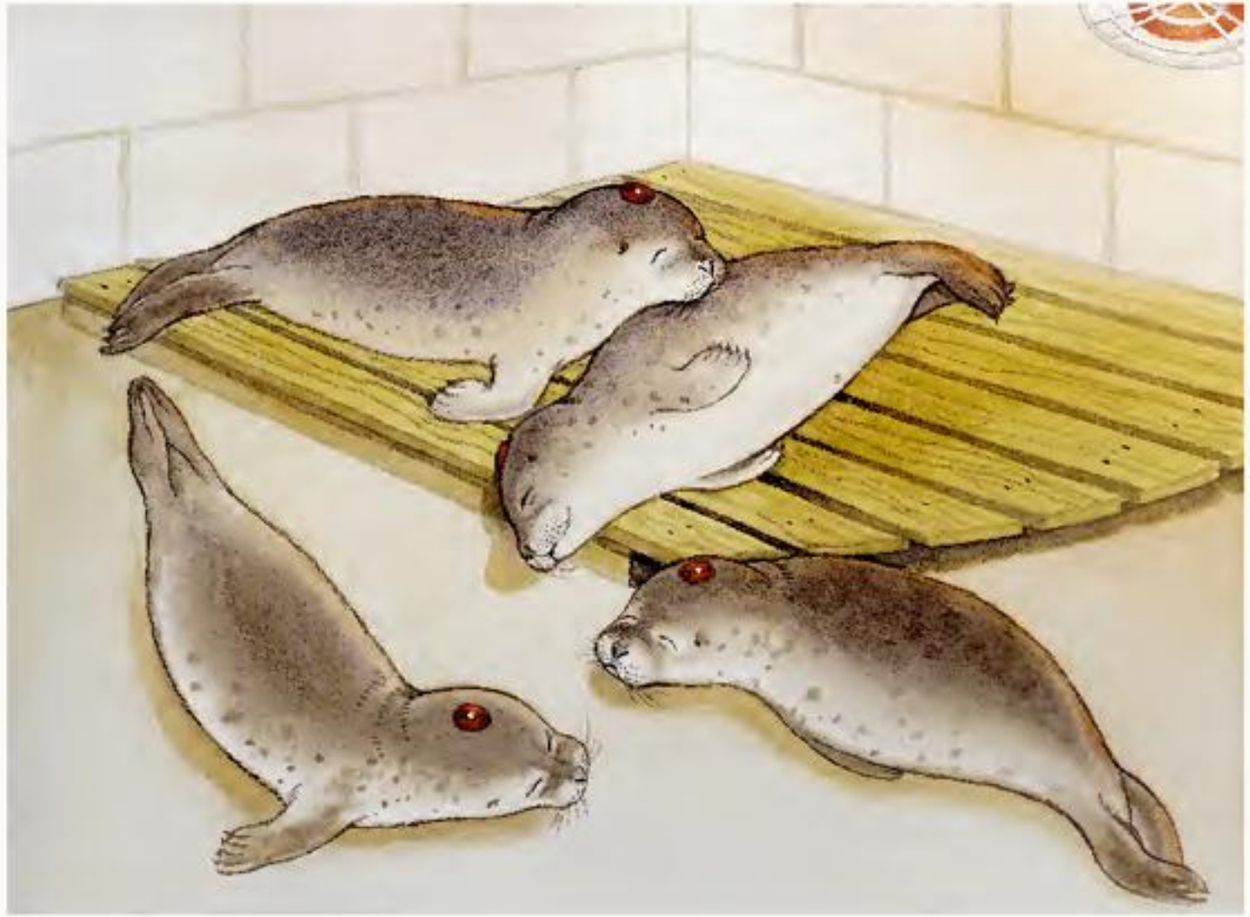

दूसरे बच्चे हाउलर को सूँघ कर पहचानने की कोशिश करते हैं. शीघ्र ही वह सब उसे अपने समूह में स्वीकार कर लेते हैं.

हाउलर एक लैंप के नीचे सो रहा है जब एक अन्य बच्चा चिल्लाने लगता है. हाउलर चौंक कर उठ जाता है. दरवाज़े पर दो स्वयं सेवक, लिंडी और केविन, खड़े हैं. भीगने से बचने के लिए उन्होंने पीले रंग के रेनकोट पहन रखे हैं. लिंडी ने तौलिया पकड़ रखा है और केविन के पास उनका खाना है.

शीघ्र ही सब बच्चे खाने के लिए चिल्लाने लगते हैं. वह अभी इतने छोटे हैं कि मछली नहीं खा सकते और साधारण दूध उतना पौष्टिक नहीं है जितना उन्हें बड़े होने के लिए चाहिए. इसके अतिरिक्त गाय के दूध में चीनी होती है जिसे सील पचा नहीं पाते. गलत आहार सील के बच्चे को रोगी बना सकता है.

इसलिए इन बच्चों को ख़ास प्रकार का आहार दिया जाता है. कई वर्ष पहले, कई प्रयास करने के बाद, एक्वेरियम के कर्मचारियों ने एक ऐसा दूध बनाया जो सील के दूध जैसा ही होता है. सील के दूध समान पौष्टिक दूध का निर्माण करना एक जटिल प्रक्रिया है और इस कृत्रिम दूध को बनाने में दो दिन लग जाते हैं. यह एक ऐसा मिश्रण है जिसमें क्रीम, पनीर का चूरमा, कई प्रकार के तेल वगेरह मिले होते हैं. इसकी गंध खट्टी क्रीम समान होती है.

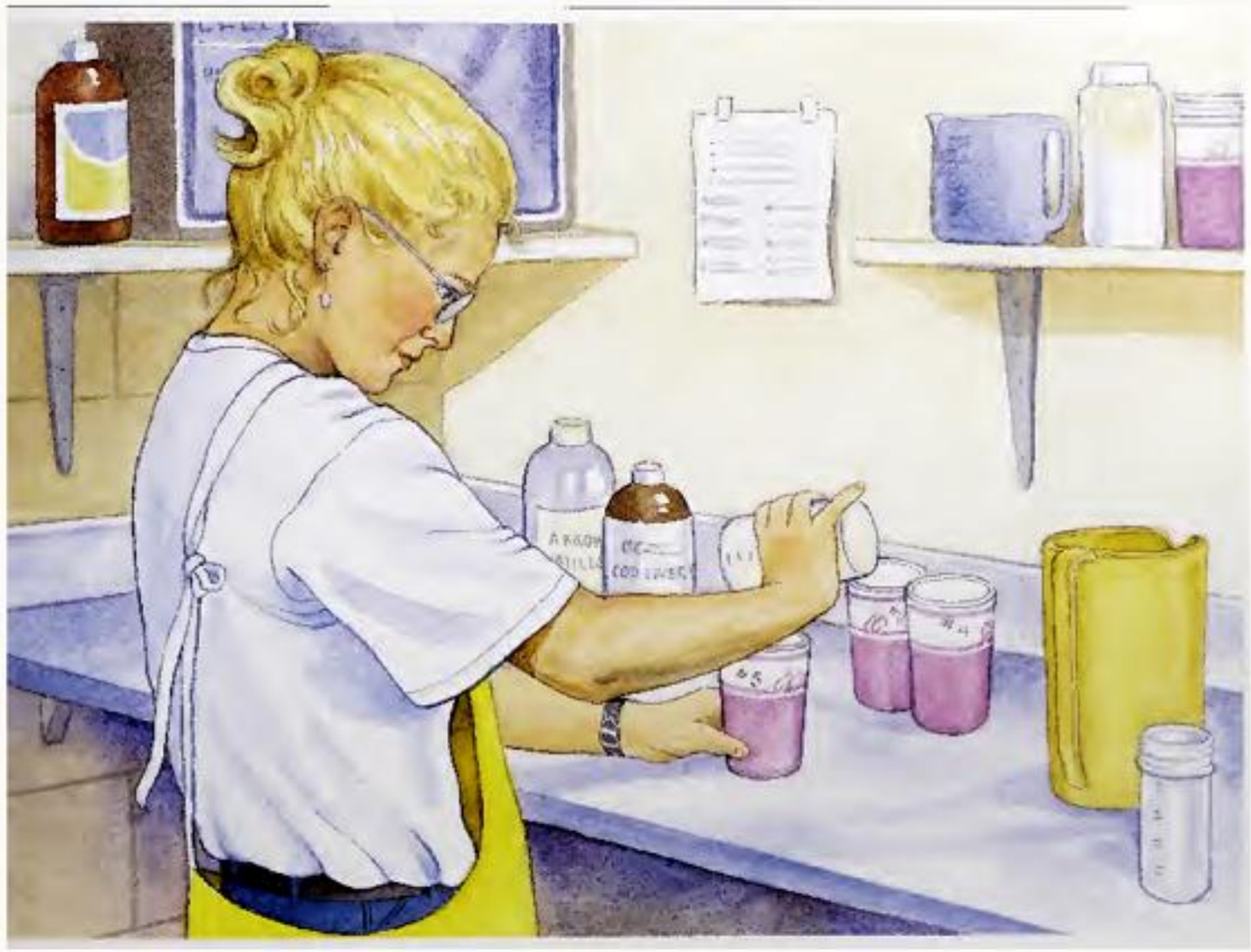

हाउलर को सबसे पहले आहार दिया जाता है. लिंडी उसे उठा कर नर्म तौलिये में अच्छे से लपेट देती है, सिर्फ उसका सिर ही बाहर है.

“आह-रूह! आह-रूऊऊह!” वह चिल्लाता है.

लिंडी ध्यान से उसका मुँह खोलती है और एक नर्म, लचीली ट्यूब उसके मुँह के अंदर डाल देती है. जब ट्यूब गले के अंदर पहुँच जाती है तो केविन कीप-नुमा सिरे में कृत्रिम दूध डालता है. हाउलर आँखें बंद कर लेता है और अपने भोजन का आनंद लेता है. हर बच्चे को हर दिन एक क्वार्ट से थोड़ा अधिक दूध, चार भागों में पिलाया जाता है.

सील के कुछ बच्चे, मानव बच्चों समान, बोतल से दूध पीते हैं. लेकिन हाउलर की तरह कई बच्चों को ट्यूब द्वारा खाना दिया जाता है क्योंकि उन्हें इस बात की समझ नहीं होती कि बोतल में उनका आहार है. इसके अतिरिक्त कुछ बच्चे इतने बीमार और कमज़ोर होते हैं कि बोतल से दूध पीना उन्हें सिखाया नहीं जा सकता. महत्वपूर्ण यह होता है कि उन्हें तुरंत आहार मिले.

हाउलर जब दूध पी लेता है तो लिंडी उसे तौलिये से निकाल कर नीचे रख देती है. वह फर्श पर रेंगते हुए लेंप के प्रकाश में चला जाता है तुरंत ही सो जाता है.

हाउलर अपना अधिकांश समय सोने, खाने, पानी में खेलने और बड़ा होने में बिताता है. जब वह एक्वेरियम में आया था तब उसका वज़न सत्तरह पौंड था: उसका वज़न पचीस पौंड होना चाहिए था. जो आहार और दवाइयाँ उसे यहाँ दी गईं उनसे उसका वज़न तेरह पौंड बढ़ गया है. हाउलर तीन माह से एक्वेरियम में है और अब उसके जीवन में कुछ नया घटने वाला है.

एक दिन ब्रेकफास्ट के बाद पशुओं की देखभाल करने वाली तकनीशन, बेलिंडा, हाउलर के कमरे में आई. वह हाउलर को उठा कर एक दूसरे कमरे में ले गई. यहाँ पर सील को वह बच्चे हैं जो हाउलर जितने ही बड़े हैं. इस कमरे में एक गहरा ताल और एक कम गहरा टैंक है.

दुपहर बाद, एक स्वयं सेवक, रोबिन, हाउलर को उठा कर टैंक के ठंडे पानी में डाल देता है. उसकी मूंछों में झनझनाहट होती है. उस टैंक में कुछ है जो पानी में तैर रहा है. वह दायें देखता है, फिर बायें देखता है और उसे एक छोटी मछली दिखाई देती है. हाउलर उसके पीछा करता है. मछली छोटी और फुर्तीली है. वह बच निकलती है. हाउलर रुक जाता है. वह बायें देखता है, फिर दायें देखता है. वह वहाँ है! वह फिर से मछली का पीछा करने लगता है.

अगर हाउलर अपनी माँ के साथ होता तो वह उसे मछली पकड़ना सीखा रही होती. अब लोगों को उसे मछली का शिकार करना सिखाना होगा. अगले कई सप्ताह तक हाउलर कई घंटे उथले टैंक में बिताता है और छोटी मछलियों का पीछा करता है. अपनी मूंछदार थूथन से मछली को टैंक की दीवार के साथ दबा देता है और फिर उस मछली को निकल भागने देता है और फिर से उसका पीछा करने लगता है.

अंतत: उसे समझ आता है कि मछलियाँ सिर्फ मनोरंजन का साधन नहीं हैं, वह उसका आहार हैं. अब हाउलर को कृत्रिम दूध नहीं पिलाया जाता. अब वह गहरे ताल में डुबकी लगा कर उन जमी हुई मछलियों को पकड़ता है जिन्हें कर्मचारी नन्हीं सीलों के लिए ताल में फेंकते हैं.

शीघ्र ही वह अपने घर जाएगा.

सितम्बर के वर्षा के दिनों में एक सुबह छह बजे, ग्रेग उस कमरे में आया जहाँ हाउलर और तीन अन्य छोटे सील सो रहे हैं. वह हाउलर को देखता है, जो पिछले पाँच महीनों से एक्वेरियम में है. अब उसका वज़न चालीस पौंड है-एक युवा हार्बर सील के बराबर. उसने मछली का शिकार करना सीख लिया है. ग्रेग जानता है कि हाउलर अब अपनी देखभाल स्वयं कर सकता है और वह सागर में अकेले रह पायेगा. हाउलर ने अपना सिर उठाया, आँखें झपकाईं और अंगडाई ली. उसके लिए तो आज का दिन अन्य दिनों की तरह ही था-अब तक.

कोन्नी, जिम और बेलिंडा सब बरसातियाँ और रबर बूट पहने, गलियारे में हैं और दो पिंजरों को तैयार कर रहे है. एक लकड़ी का बना है और उस पर नीला रंग किया हुआ है, दूसरा प्लास्टिक का है और उसका दरवाज़ा जालीदार है-यह वैसा ही है जिस में हाउलर को लाया गया था, बस उससे बड़ा है.

नीला लकड़ी का पिंजरा कमरे में लाया जाता है. इसकी गंध अनोखी है और सील थोड़ा असमंजस में हैं. दो सील पानी में डुबकी लगा देती हैं और दूर से सब कुछ देखती हैं.

जिम तरणताल और एक मादा सील के बीच में खड़ा है. ग्रेग, कोन्नी, बेलिंडा और वह उस सील को पिंजरे में आने के लिए संकेत करते हैं. वह भीतर आ जाती है और दरवाज़ा बंद कर दिया जाता है. बेलिंडा और ग्रेग उसे ट्रक में ले जाते हैं.

अब हाउलर की बारी है. वह भयभीत नहीं है. उसे इन लोगों पर विश्वास है और जानता है कि वह उसे कभी चोट नहीं पहुँचायेंगे. उसे प्रोत्साहित करने के लिए पिंजरे में एक मछली फेंक दी जाती है. हाउलर पिंजरे के अंदर चला जाता है.

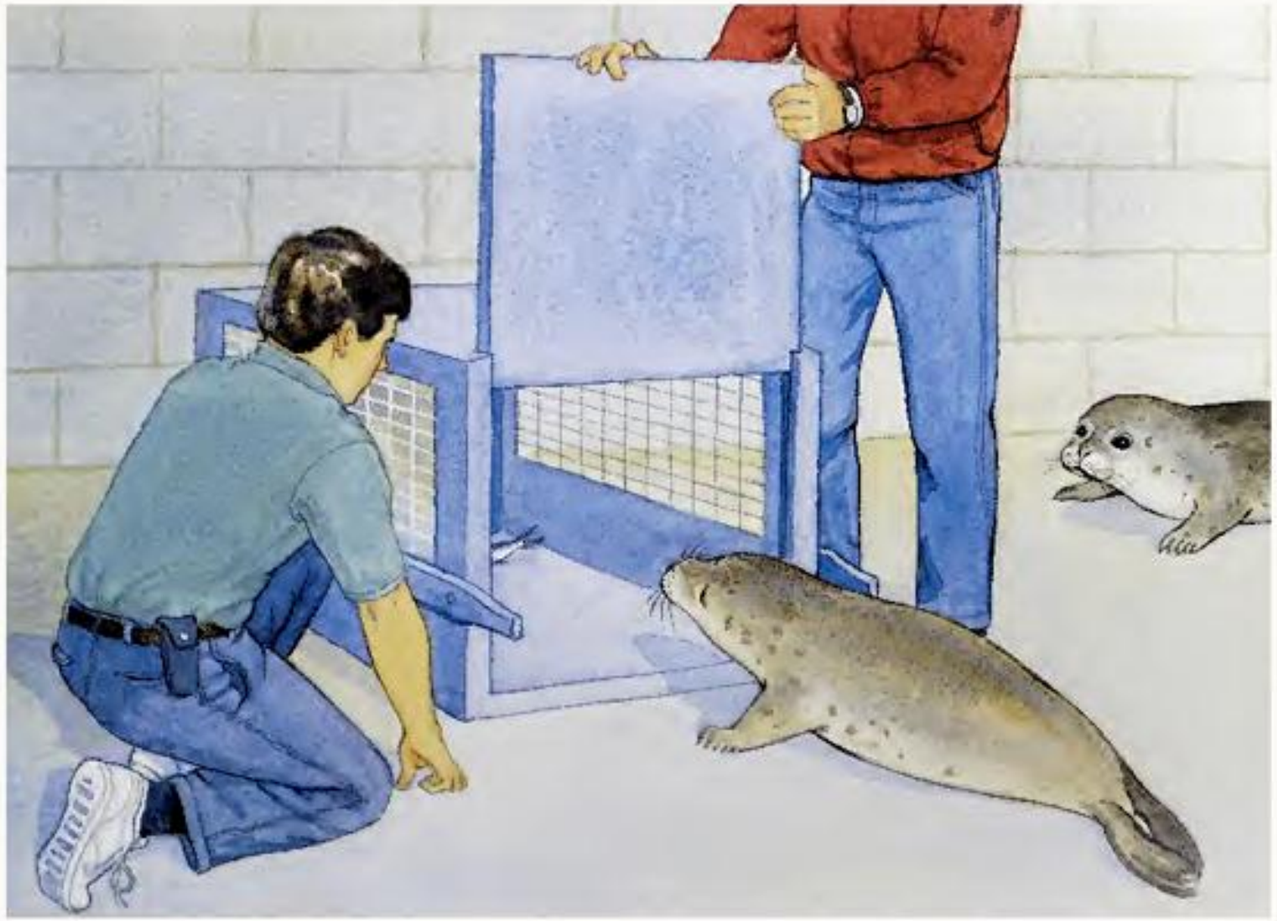

एक्वेरियम के लोग ट्रक द्वारा दोनों सीलों को सागर में छोड़ने के लिए सौ मील दूर केप कॉड ले जायेंगे. ग्रेग सावधानी के साथ ट्रक चला रहा है क्योंकि वर्षा के कारण सडकों पर फिसलन है.

हाउलर शांत है. अपने पिंजरे के अंदर वह ट्रक में बैठे लोगों की धीमी आवाजें और टायरों के चलने की आवाज़ सुन पा रहा है.

जिस जगह इन्हें छोड़ना है वह जगह खाली है. वहाँ ठंड है और बूँदाबाँदी हो रही है. ठंड के चलते एक्वेरियम के लोगों ने अपने कंधे झुका रखे हैं. वह हाउलर के पिंजरे को उठा लेते हैं. उसे पहले समुद्र में छोड़ा जाएगा. चारों लोग पिंजरे को कोनों से पकड़ कर सावधानी के साथ रेत पर चलने लगते हैं.

पिंजरे के जालीदार दरवाज़े से हाउलर बाहर देखता है. उसकी नाक ऐसी गंध महसूस करती है जो उसने महीनों से महसूस न की थीं. अचानक जालीदार दरवाज़ा खुल जाता है अब उसके और सागर के बीच में कुछ भी नहीं है.

हाउलर पहले तो हिचकिचाता है. लेकिन सागर का आकर्षण बहुत प्रभावशाली है. वह रेंगता हुआ बाहर आ जाता है. वर्षा और ठंड से उसे कोई परेशान नहीं होती.

वह पानी में चला जाता है. लहरों में तेज़ी से आगे जाते समय उसका सिर पानी से बाहर आता है. अपनी बड़ी-बड़ी काली आँखों से वह पीछे सागर तट पर खड़े लोगों को देखता है. वह फिर डुबकी लगाता और अदृश्य हो जाता है.

ग्रेग, कोन्नी, जिम, और बेलिंडा उसे देखते रहते हैं. अचानक कोन्नी को गहरे नीले पानी में धुंधला सा कुछ दिखाई पड़ता है.

“वह वहाँ पर है!” वह चिल्लाई.

हाउलर खुले सागर में है.

वह अपने घर लौट रहा है.